1

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी

www.AryaSandeshTV.com

आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 44, अंक 19 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 29 मार्च, 2021 से रविवार 4 अप्रैल, 2021

विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121

दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के संयुक्त तत्तवावधान में

सेवा संकल्प दिवस के रूप में मनाया

स्मृतिशेष पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी का 98वां जयन्ती समारोह

90 वर्ष से अधिक आयु के आर्य महानुभावों को दिया गया "आर्य वयोवृद्ध सेवा सम्मान"

महाशय जी की बातें सदैव करती रहेंगी हमारा मार्गदर्शन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अनन्य से शिष्य पदमभूषण महाशय धर्मपाल जी का 98 वां जन्मोत्सव 26 मार्च 2021 को सायंकाल आर्य समाज मंदिर 15 हनुमान रोड के प्रांगण में मानव सेवा संकल्प दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर महाशय जी के सुपुत्र श्री राजीव गुलाटी जी पुत्रवधु श्रीमती ज्योति गुलाटी जी एवं श्री प्रेम अरोड़ा जी और श्री वीरेंद्र अग्रवाल जी ने मुख्य यजमान के रूप में यज्ञ में आहुतियां देकर यज्ञपुरुष महाशय जी को याद किया।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य आनंद जी, डॉ. कर्ण देव जी, डॉ ऋषि पाल शास्त्री जी, आचार्य धनंजय जी और उनके निर्देशन में आर्य गुरुकुल रानी बाग के ब्रह्मचारी तथा आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार के ब्रह्मचारिणियों और गुरु विरजानंद संस्कृत कुलम के ब्रह्मचारियों ने वेद पाठ किया।

इस अवसर पर आर्य वयोवृद्ध सम्मान विशेष रूप से उन महानुभावों को प्रदान किया, जिन्होंने 90 वर्षों से अधिक उम्र के होने के बावजूद आर्य समाज के प्रति अपना लगाव रखा, इन महानुभावों को सम्मान देने के लिए श्री राजीव गुलाटी जी, श्रीमती ज्योति गुलाटी जी, दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, सभा के उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य जी, श्री शिव कुमार मदान जी, आर्य केंद्रीय सभा के कीर्ति शर्मा जी, अजय सहगल, अरुण प्रकाश जी एवं अनेक अन्य महानुभावों ने वयोवृद्धजनों को शाल, श्रीफल, पीत वस्त्र, मोती माला एवं प्रशस्ति पत्र भेंट करके सम्मानित किया।

सम्मानित होने वाले वृद्धजनों में ठाकुर जगबीर सिंह आर्य (90 वर्ष) आप त्रिनगर आर्य समाज के स्तंभ है, श्री वेद प्रकाश कथूरिया जी (93 वर्ष) आप कीर्ति नगर आर्य समाज से जुड़े हुए हैं, श्री विद्यासागर

- शेष पृष्ठ 4 पर

98वें जन्मदिवस समारोह में यजमान के रूप में उपस्थित श्रीमती ज्योति गुलाटी एवं श्री राजीव गुलाटी जी, श्री प्रेम अरोड़ा जी एवं श्री वीरेन्द्र जी। यज्ञ ब्रह्मा के रूप में उपस्थित हैं आचार्य आनन्द जी, डॉ. कर्णदेव शास्त्री जी आचार्य ऋषिपाल जी। 90 वर्ष से अधिक आर्य वाले आर्यजनों को सम्मानित करते महाशय राजीव गुलाटी जी, श्रीमती ज्योति गुलाटी जी एवं सभा अधिकारीगण सर्वश्री धर्मपाल आर्य जी, कीर्ति शर्मा जी, अरुण प्रकाश जी, सतीश आर्य जी एवं सुखबीर सिंह आर्य जी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक सम्पन्न : पारित हुए कई प्रस्ताव - लिए गए महत्त्वपूर्ण निर्णय

संगठन की मजबूती एवं सहयोग के लिए 1 मई से होंगे ईकाई स्तर पर गोष्ठियां व चिन्तन शिविर

वर्ष 2020-21 जीरो वर्ष घोषित: आर्यसमाजें 31 मार्च, 20 तक की उपस्थिति के आधार पर 31 अगस्त से पूर्व सम्पन्न कराएं चुनाव

1 अप्रैल 2021 से सरकार द्वारा जारी कोरोना नियमों के अनुसार पूर्ण रूप से संचालित होंगी आर्यसमाजों की गतिविधियां

5 सितम्बर, 2021 को आयोजित होगा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि साधारण सभा अधिवेशन

- विस्तृत सूचना पृष्ठ 5 पर

देववाणी - संस्कृत **वेद-स्वाध्याय**

हे परमेश्वर! हम तेरे रथ्य और सम्भजन करने वाले हों

नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽन पीपेः।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः।। -ऋक्. 4/16/21
ऋषिः वामदेवः।। **देवता** - इन्द्रः।। **छन्दः** निचृत्पङ्क्तिः।।

शब्दार्थ - इन्द्र = हे इन्द्र! **नु** = निःसन्देह तू **स्तुतः** = स्तुति किया गया है, **नु** = अब भी तू **गृणानः** = मुझसे स्तूयमान होता हुआ **जरित्रे** = मुझ स्तोता के लिए **इषम्** = इष्ट वस्तु को, अन्न को **नद्यः न** = नदियों की भाँति **पीपेः** = भरपूर कर दे। **हरिवः** = हे हरियोंवाले! **ते** = तेरा **नव्यम्** = नया **ब्रह्म** = अनुभव, ज्ञान **अकारि** = मैंने किया है, मैं **धिया** = बुद्धि और कर्म से **रथ्यः** = तेरे रथ के योग्य और **सदासाः** = तेरा सदा संभजन करने वाला **स्याम** = होऊँ।

विनय - हे परमेश्वर! तू सदा सब सन्तों द्वारा स्तुति किया गया है। मैं भी आज तेरी ही स्तुति कर रहा हूँ। स्तूयमान होता हुआ तू अब तो मुझ स्तोता की भी इच्छाओं को पूर्ण कर दे। मुझे वह 'इष' प्रदान कर दे जिसका मैं भूखा हूँ। इस अन्न से तू मुझे छका दे। जैसे नदियाँ जल से भरपूर होती हैं, वैसे तू मुझे मेरे 'इष' से भरपूर कर दे। मैं तो तेरे दर्शन का भूखा हूँ। अपना यह दर्शन देकर हे इन्द्र! तू मुझे पूरी तरह परितृप्त कर दे। मैंने आज तेरा नया अनुभव किया है, तेरे एक नये स्वरूप का ज्ञान प्राप्त किया है और मैंने तेरे इसी स्वरूप के खूब गुण गाये हैं। हे हरिवन्! तू अब अपने इस रूप के दर्शन देकर मुझे पूरी तरह तृप्त कर दे। हे हरियोंवाले! मैं देखता हूँ कि तू अपने इस संसाररूपी रथ को अपनी ज्ञान-क्रिया और बलक्रिया के हरियों (घोड़ों) से संचालित कर रहा है। तेरे इस स्वरूप को देखकर मैं अब और कुछ नहीं चाहता, इतना ही चाहता हूँ कि मैं तेरे इस रथ के योग्य हो जाऊँ, 'रथ्य' हो जाऊँ, इस तेरे संसार में बसने योग्य हो जाऊँ सच्चा मनुष्य बन जाऊँ, तेरा मनुष्य बन जाऊँ। अब मैं तेरा मनुष्य बनकर ही इस संसार में रहना चाहता हूँ। तेरे हरिवान् रूप को देखकर अब मैं चाहता हूँ कि अपनी बुद्धि से, अपने कर्म से तेरा रथ्य हो जाऊँ और सदा तेरा संभजन करनेवाला हो जाऊँ। तेरा रथ्य होने के लिए यह आवश्यक है कि मैं सदा तेरा संभजन करूँ। इसलिए हे इन्द्र! अब तू ऐसी कृपा कर कि मैं अपनी प्रत्येक बुद्धि से, अपने प्रत्येक कर्म से सदा रथ्य बना रहूँ और सदा तेरा संभजन करनेवाला बना रहूँ।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

ननों से पूछताछ पर इतनी हैरानी क्यों?

क्या किसी नन से पूछताछ नहीं हो सकती?

.....गरीब और अनाथ लड़कियों को सेक्स स्लेव बनाकर उनसे बच्चें पैदा करवाना और फिर उन्हें बेचना। यह सब देखकर अधिकारियों की आँखें फटी रह गयी। सभी गर्भवती लड़कियों को छुड़ाकर नामकुम महिला छात्रावास भेजा गया। इसके बाद पुलिस ने संस्था की नन कोंसिलिया और दूसरे कर्मचारियों से पूछताछ शुरू की। पहले तो कोंसिलिया और अनिमा पुलिस को इधर-उधर घुमाती रहीं, लेकिन जब सख्ती हुई तो दोनों टूट गईं। कोंसिलिया ने पुलिस के समक्ष अपने इकबालिया बयान में कहा हमने बच्चे बेचे हैं।.....

बात बहुत छोटी सी थी कि झांसी में धर्मांतरण के शक में ननों को ट्रेन से उतारा इसके बाद अगली ट्रेन से उन्हें जहाँ जाना था, वहां के लिए रवाना कर दिया गया। लेकिन बखेड़ा खड़ा हो गया जब, इस मामले में केरल के सीएम पिनाराई विजयन अमित शाह को चिट्ठी लिख देते हैं और राहुल गाँधी जी ट्वीट करते हैं। इसके बाद सवाल बना कि क्या झाँसी पुलिस ने सही किया या गलत? क्या ननों से पूछताछ नहीं की जा सकती? ऐसे कई सवाल इस मामले से उठ खड़े हुए हैं, क्योंकि युपीए गठबंधन के समय एक झूठी शिकायत पर कांची मठ के प्रमुख शंकराचार्य जयेंद्र सरस्वती को दीपावली की रात में नवंबर 2004 को निराधार आरोप लगाकर गिरफ्तार कर उस जीप में डाल दिया गया था जिसमें पहले गुंडे-मवाली बैठे थे। तब एक सवाल प्रणव मुखर्जी, सोनिया गांधी और मनमोहन जी से करते हैं कि क्या भारत सरकार इतनी हिम्मत रखती है कि इस्टर के पर्व पर किसी पादरी या ईद की रात किसी मौलवी को गिरफ्तार कर सकें?

हालाँकि ये मामला जयेंद्र सरस्वती जी जैसा बड़ा नहीं था सिर्फ इतना था कि बजरंग दल के कुछ कार्यकर्ताओं ने पुलिस से शिकायत की थी कि दो महिलाओं को धर्म परिवर्तन के लिए दो नन जबरदस्ती ले जा रही हैं। इसके बाद पुलिस ने सभी चार महिलाओं को ट्रेन से उतारकर हिरासत में ले लिया और जाँच के बाद छोड़ दिया।

दरअसल आज घर-घर जा कर मिशनरीज द्वारा धर्म परिवर्तन का खेल चल रहा है। इस षड्यंत्र में केवल झारखण्ड, असम या छतीसगढ़ ही नहीं अब इनका नया गढ़ बना है पंजाब। यहाँ ये लोग जमकर चंगाई सभा जैसे फ्रॉड आयोजन करके वीर गुरुओं की संतानों को भी जीसस का घूंट पिला रहे हैं। जैसे ही अब लोग जागरूक हुए तो इन्होंने तरीका बदला और इस कठिनाई से पार पाने के लिए नए हथकंडों का प्रयोग शुरू किया गया, जैसे मदर मैरी की गोद में ईसा मसीह की जगह गणेश या कृष्ण को चित्रांकित कर ईसाइयत का प्रचार शुरू किया गया, ताकि आदिवासियों को लगे कि वे तो हिंदू धर्म के ही किसी संप्रदाय की सभा में जा रहे हैं। इसके अलावा ईसाई मिशनरियों को आप भगवा वस्त्र पहनकर हरिद्वार, ऋषिकेश से लेकर तिरुपति बालाजी तक धर्म प्रचार करते पा सकते हैं। यही हाल पंजाब में है, जहां बड़े पैमाने पर सिखों को ईसाई बनाया जा रहा है। पंजाब में चर्च का दावा है कि प्रदेश में ईसाइयों की संख्या सात से दस प्रतिशत हो चुकी है।

अब सवाल ये कि क्या झाँसी में नन की गिरफ्तारी वाकई में इतनी बड़ी बात थी कि इसे लेकर अंतर्राष्ट्रीय विरोध दर्शाया जाये। जो लोग आज दो ननों की गिरफ्तारी पर हायतोबा मचा रहे हैं ये लोग उस समय कहाँ थे जब पिछले साल 16 अप्रैल को पालघर में दो साधुओं की पीट-पीट कर हत्या कर दी गई थी?

अब कुछ लोग कह रहे हैं कि नन बेचारी तो ओड़िसा जा रही थी, उन्हें तो नाहक ही तंग किया गया। तो उन्हें कुछ समय पीछे ले जाते हैं कितने लोगों ने निर्मल हृदय संस्था का नाम सुना है। यह संस्था साल 2018 में ननों के कार्यों और अपनी काली करतूतों के कारण उस समय चर्चा में आई थी। जब नवजात शिशु को बेचने के मामले में इस संस्था की नन कोंसिलिया और अनिमा अंदवार को गिरफ्तार किया गया था।

हालाँकि टेरेसा की मिशनरीज ऑफ चौरिटी के अंतर्गत काम करने वाली इस संस्था की तरफ देखना भी एक बड़ी बात थी। कार्रवाही का तो सवाल ही नहीं उठता लेकिन मामला इतना घिनौना था कि अखबारों के छोटे पन्नों से यह खबर उड़कर देश भर में फैल गयी और तब लोगों को ननों का असली चेहरा देखने को मिला था। दरअसल सौरभ अग्रवाल और प्रीति अग्रवाल ने 2018 में 5 मई को एक लाख बीस हजार रुपये में इस संस्था से एक नवजात बच्चें को खरीदा था। लेकिन ननों ने इस शिशु को वापस ले लिया और दंपती को नहीं लौटाया। जब अग्रवाल दंपती ने बाल कल्याण समिति में शिकायत दर्ज कराई बस यहीं से इस संस्था की एक के बाद एक काली करतूतें उजागर होती चली गईं।

इस संस्था के पूरे प्रपंच और ईसाइयत में ननों को समझने के लिए हमें थोड़ा और तह में जाना होगा। मिशनरीज ऑफ चौरिटी ने अपने यहां एक लड़की को रखा था, जिसके साथ बलात्कार किया गया था। वह गर्भवती थी और प्रसव के लिए उसे रांची के सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया था। उसने एक बच्चे को जन्म दिया। चार दिन बाद कोंसिलिया और एक नन अनिमा इंदवार ने उस नवजात शिशु को अग्रवाल दंपती को बेच दिया। अब शिकायत मिलने के बाद समिति की अध्यक्ष रूपा कुमारी पुलिस के साथ निर्मल हृदय पहुंचीं तो वहां का नजारा देखकर स्तब्ध रह गयी क्योंकि उन्हें वहां 13 और गर्भवती लड़कियां मिलीं। इनमें केवल पांच लड़कियां बालिग थीं, बाकी नाबालिग थीं।

यानि गरीब और अनाथ लड़कियों को सेक्स स्लेव बनाकर उनसे बच्चें पैदा करवाना और फिर उन्हें बेचना। यह सब देखकर अधिकारियों की आँखें फटी रह गयी। सभी गर्भवती लड़कियों को छुड़ाकर नामकुम महिला छात्रावास भेजा गया। इसके बाद पुलिस ने संस्था की नन कोंसिलिया और दूसरे कर्मचारियों से पूछताछ शुरू की। पहले तो कोंसिलिया और अनिमा पुलिस को इधर-उधर घुमाती रहीं, लेकिन जब सख्ती हुई तो दोनों टूट गईं। कोंसिलिया ने पुलिस के समक्ष अपने इकबालिया बयान में कहा हमने बच्चे बेचे हैं। अब झाँसी वाली घटना पर आपा पीटने से पहले राहुल गाँधी और केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन से सवाल पूछिए कि झाँसी में दो ननों से सिर्फ पूछताछ करने से इनकी आत्मा अगर आहत हो गयी तो इनकी आत्मा किस मिटटी की बनी है जो केरल में लगातार पादरियों द्वारा ननों के यौन शोषण और रेप से इनकी आत्मा आहत क्यों नहीं होती?

- सम्पादक

योग का उद्देश्य

- स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

....समाधि की साधना से जो साधक को ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं कुछ स्वाभाविक रूप से, कुछ उस विशेष वस्तु की साधना से। उनका वर्णन भी उन्होंने किया और ये ही उपलब्धियाँ साधक का लक्ष्य नहीं है किन्तु ये मार्ग में आती ही हैं। और पहले भी यह भ्रम रहा है कि योग की जो सिद्धियां हैं, जिसे योग की भाषा में विभूति कहते हैं वे यथार्थ हैं या नहीं? तो महर्षि कपिल ने सांख्य में दृढ़तापूर्वक कहा है कि- 'योग सिद्ध्यो ऽपि औषधदिसिद्धवत् नाऽपलप नीया:'' अर्थात् जिस प्रकार से सुयोग्य चिकित्सकों द्वारा निर्मित औषधियों से अनेक असाध्य रोग यहाँ तक कि मरणासन्न रोगी भी स्वस्थ हो जाता है (जैसे आज भौतिक वैज्ञानिकों द्वारा कोबरा नाग-जैसे विषैले जन्तुओं के विष से अनेक जीवन प्रदायिनी औषधियों का निर्माण हो रहा है, महर्षि पतंजलि एवं कपिल मुनि की भाषा में इसे सिद्धि या विभूति कह सकते हैं) ठीक उसी प्रकार से योग की सिद्धियों का भी अपलाप नहीं किया जा सकता अर्थात् उनको अस्वीकार नहीं किया जा सकता। ...

योग शब्द 'युजिर् योगे' 'युज समाधौ' इन धातुओं से निष्पन्न होता है किन्तु वर्तमान समय में ही नहीं अपितु पहले भी योग शब्द के अनेक अर्थों में प्रयोग देखे जाते हैं किन्तु सबका उद्देश्य एक ही है-''मन की एकाग्रता।'' इसी बात को महर्षि पतंजलि ने अपने योगदर्शन में किसी को योग के सम्बन्ध में भ्रान्ति न हो, इसलिए उन्होंने योगदर्शन के द्वितीय सूत्र में ही कहा- 'योगश्चित्तवृत्तिर्निरोध:'। (योगदर्शनम् 1/2)

चित्तवृत्ति के सम्बन्ध में विद्वानों ने यह निश्चय किया है कि यहां चित्त शब्द से मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, इस अन्त:करण चतुष्टयवृत्ति का ग्रहण होता है। इनके निरुद्ध होने पर क्या लाभ होता है? इसको महर्षि पतंजलि ने जिज्ञासु की जिज्ञासा का समाधान करते हुए तत्काल बता दिया कि ''तदा द्रष्टु: स्वरूपेऽवस्थानम्'' (योग. 1/3) अर्थात् योगसिद्ध होने पर जीवात्मा का परमात्मा में अवस्थान या वृत्तियों से रहित होकर अपने में अवस्थान होता है और अपने में अवस्थान होने का लाभ क्या है? इसको भी उन्होंने बतला दिया कि वृत्तियां जो पांच प्रकार की हैं- प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति। (योग. 1/6) इनके नाश होने पर या इनके यथार्थ ज्ञान होने पर अथवा अवरुद्ध होने पर अनेक उपलब्धियां साधक को प्राप्त होती हैं। उन वृत्तियों के निरोध के अनेक उपाय समाधिपाद, साधनपाद, विभूतिपाद, कैवल्यपाद में दर्शाये गये हैं। साधक धैर्य से इनमें से किसी भी मार्ग का अवलम्बन कर परमात्मा में अवस्थित हो सकता है। अवस्थित हो जाने पर वृत्तिजन्य सभी क्लेश समाप्त हो जाते हैं।

योग के उन्होंने आठ अङ्ग बतलाए हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि। (योग. 2/29) जिस प्रकार यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार इन बहिरंग योग के साधकों को लाभ प्राप्त होता है। उसी प्रकार धारणा, ध्यान आदि से भी जो लाभ होता है उसका भी दिग्दर्शन कराया। अन्त में समाधि से जो आन्तरिक लाभ अर्थात् जो योग का उद्देश्य है-'स्वरूप में अवस्थित होना' वो प्राप्त करता है। जिसका निर्देश आचार्य ने अपने योगदर्शन के चतुर्थ पाद के अन्तिम सूत्र में ही कह दिया और अन्त में कैवल्य पाद में स्पष्ट कहा कि - ''पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिप्रसव: कैवल्यं स्वरूपप्रतिष्ठा वा चितिशक्तिरिति।'' (योग. 4/34)

जब साधक समाधि की अवस्था में धीरे-धीरे प्रवेश करता है, तो उसे अनेक प्रकार के समाधिजन्य फलों की अवाप्ति होती है। जिसे योग में विभूति के नाम से कहा जाता है। साधक जब इस समाधि की अवस्था में प्रवेश करता है, तो जैसे भौतिक पदार्थों की साधना में या अन्वेषण में उसे अनेक फल प्राप्त होते हैं, ठीक उसी प्रकार से समाधि-अवस्था के साधना में भी अनेक लाभ होते हैं। जिसका दिग्दर्शन महर्षि ने तृतीय पाद, चतुर्थ पाद में कराया है। यह साधक के ऊपर निर्भर करता है कि उसकी साधना मृदु, मध्य या तीव्र है। महर्षि पतंजलि ने योगदर्शन में कहा है कि - ''तीव्रसंवेगानामासन्न:'' अर्थात् तीव्र संवेग वाले साधक को शीघ्र ही समाधि एवं समाधिजन्य लाभ प्राप्त होता है। जैसे- 'भौतिक अनुसन्धान में अहर्निश दत्तचित्त संलग्न वाला व्यक्ति शीघ्र लाभ प्राप्त करता है। उसी प्रकार से तीव्र संवेग वाला साधक समाधि एवं समाधिजन्य लाभ को प्राप्त करता है। इसमें साधक की जन्म-जन्मान्तर की जहाँ साधना सहायक होती है उसमें इस जन्म का अध्यवसाय भी क्षिप्रकारी होता है।

आज ही नहीं पहले भी कुछ लोग योग के आठ अङ्गों में से किसी अङ्गविशेष के साधना को ही योग मानते या प्रसारित करते हैं। उसी प्रकार आज भी लोग अंगविशेष की साधना को ही योग प्रख्यापित करते हैं तथा समाज में उसका प्रचार-प्रसार करते हैं। जिस प्रकार आम्रवष्टक्ष है, उसके अङ्ग जड़, तना, फूल, पत्ती और फल, ये सभी अङ्गाङ्गिभाव से आम्रपदवाच्य है। आम्र का मूल, उसका तना, आम्र की शाखा, आम्र की पत्ती, आम्र का फूल, आम्र का फल ये सब मिलकर आम्र हैं। इस प्रकार से महर्षि का कथन है कि आठों अङ्ग मिलकर ही योगपद-वाच्य होते हैं। अब साधक अपनी साधना से कहां तक पहुंचता है, यह उसके अध्यवसाय एवं प्रतिभा पर निर्भर करता है।

समाधि की साधना से जो साधक को ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं कुछ स्वाभाविक रूप से, कुछ उस विशेष वस्तु की साधना से। उनका वर्णन भी उन्होंने किया और ये ही उपलब्धियाँ साधक का लक्ष्य नहीं है किन्तु ये मार्ग में आती ही हैं। और पहले भी यह भ्रम रहा है कि योग की जो सिद्धियां हैं, जिसे योग की भाषा में विभूति कहते हैं वे यथार्थ हैं या नहीं? तो महर्षि कपिल ने सांख्य में दृष्टढ़तापूर्वक कहा है कि- 'योगसिद्ध्योऽपि औषधादिसिद्धवत् नाऽपलपनीया:'' अर्थात् जिस प्रकार से सुयोग्य चिकित्सकों द्वारा निर्मित औषधियों से अनेक असाध्य रोग यहाँ तक कि मरणासन्न रोगी भी स्वस्थ हो जाता है (जैसे आज भौतिक वैज्ञानिकों द्वारा कोबरा नाग-जैसे विषैले जन्तुओं के विष से अनेक जीवन प्रदायिनी औषधियों का निर्माण हो रहा है, महर्षि पतंजलि एवं कपिल मुनि की भाषा में इसे सिद्धि या विभूति कह सकते हैं) ठीक उसी प्रकार से योग की सिद्धियों का भी अपलाप नहीं किया जा सकता अर्थात् उनको अस्वीकार नहीं किया जा सकता ।

महर्षि चरक ने अपने चरकसंहिता में लिखा है। पुरुषोऽयं लोकसंवित:, लोकसंवितोऽयं पुरुष: अर्थात् जो कुछ ब्रह्माण्ड में है वह मात्रा के अनुरूप में सभी शरीर में है। या जो कुछ शरीर में है वही लोक अर्थात् ब्रह्माण्ड में है। इसी भाव को लेकर विद्वानों में यह उक्ति प्रचलित हुई ''यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे'' जिस प्रकार भौतिक ब्रह्माण्ड के पदार्थों का अनेक प्रकार से परिष्कार कर अनेक अद्भुत कार्य किये जाते हैं जैसे आज ऐसे यन्त्र का आविष्कार भौतिक वैज्ञानिकों ने कर लिया है। जो अत्यधिक व्यवधान होने पर भी उनकी जानकारी प्राप्त होती है जैसे पृथ्वी में कहां क्या है? इसका भौतिक यन्त्र से ऊपर ही ऊपर अर्थात् पृथ्वीतल के ऊपर से ही ज्ञान हो जाता है, अनेक भौतिक व्यवधानों के पश्चात् भी उसके स्वरूप का वास्तविक ज्ञान हो जाता है।

उसी प्रकार योग में भी उन शक्तियों का विकास कर लेने पर सूक्ष्म व्यवधानयुक्त और अत्यन्त दूरी वाली वस्तुओं का सहज में ज्ञान हो जाता है इसी बात को महर्षि ने अपने योगदर्शन में लिखा ''प्रवृत्त्यालोकन्यासात् सूक्ष्मव्यवहित विप्रकृष्टज्ञानम्'' (योग. 3/25) इस प्रकार की अनेक योग उपलब्धियों को जिनको विभूति नाम से जाना जाता है उन्होंने दर्शाया है। सामान्य रूप से अज्ञ लोग उन विभूतियों को असम्भव तथा जादू-टोना समझते हैं। किन्तु ज्ञानी लोग उन सभी ज्ञान को जानते हुए भौतिकपदार्थों की भांति प्रत्यक्ष दर्शन करते हैं। ध्वनिचिकित्सा, मानसचिकित्सा इसके अवप्रत्यक्ष उदाहरण हो गये हैं, यहाँ इसके प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं।

जैसा कि लोक में यह होता ही रहता है कि पुरुषार्थहीन लोग अपनी दुर्बलता को आच्छादित करने के लिए (छिपाने के लिए) इन्हें प्रक्षिप्त आदि कहकर इनका अपलाप करते हैं। उनमें दो प्रकार के लोग हैं एक तो वे लोग हैं जो उन ऐश्वर्यों को प्राप्त न करके भी असत्य में ही मुझे प्राप्त हैं इसका मिथ्याप्रदर्शन करते हैं। दूसरे वे लोग हैं जो इनको असत्य कहकर इनका परित्याग कर देते हैं।

- शेष पृष्ठ 7 पर

प्रेरक प्रसंग

यह नर-नाहर कौन था?

यह घटना प्रथम विश्वयुद्ध के दिनों की हैं। रियासत बहावलपुर के एक ग्राम में मुसलमानों का एक भारी जलसा हुआ। उत्सव की समाप्ति पर एक मौलाना ने घोषणा की कि कल दस बजे जामा मस्जिद में अछूत कहलानेवाले भाइयों को मुसलमान बनाया जाएगा, अत: सब मुसलमान नियत समय पर मस्जिद में पहुँच जाएँ।

इस घोषणा के होते ही एक युवक ने सभा के संचालकों से विनती की कि वह इसी विषय में पाँच मिनट के लिए अपने विचार रखना चाहता है। वह युवक स्टेज पर आया और कहा कि आज के इस भाषण को सुनकर मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि कल कुछ भाई मुसलमान बनेंगे। मेरा निवेदन है कि कल ठीक दस बजे मेरा एक भाषण होगा। यह वक्ता महोदय, आप सब भाई तथा हमारे वे भाई जो मुसलमान बनने की सोच रहे हैं, पहले मेरा भाषण सुन लें फिर जिसका जो जी चाहे सो करे। इतनी-सी बात कहकर वह युवक मंच से नीचे उतर आया।

अगले दिन उस युवक ने 'सार्व भौमिक धर्म' के विषय पर एक व्याख्यान दिया। उस व्याख्यान में कुरान, इंजील, गुरुग्रन्थ साहब आदि के प्रमाणों के अतिरिक्त वेद की महिमा पर विश्व के अनेक विद्वानों के प्रमाणों की झड़ी लगा दी। युक्तियों वा प्रमाणों को सुन-सुनकर मुसलमान भी बड़े प्रभावित हुए।

इसका परिणाम यह हुआ कि एक भी दलित भाई मुसलमान न बना। जानते हो-धर्म-दीवाना, यह नर-नाहर कौन था? **इसका नाम पण्डित चमूपति था।** हमें गर्व तथा संतोष है कि हम अपनी इस पुस्तक 'तड़पवाले तड़पाती जिनकी कहानी' में आर्यसमाज के इतिहास की लुप्त-गुप्त सामग्री प्रकाश में ला रहे हैं। ***- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु***

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

प्रथम पृष्ठ का शेष

सेवा संकल्प दिवस के रूप में मनाया स्मृतिशेष पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी का 98वां जयन्ती ....

यज्ञोपरान्त श्रीमती ज्योति गुलाटी एवं महाशय राजीव गुलाटी जी को आशीर्वाद प्रदान करते स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी डॉ. देवव्रत जी सरस्वती एवं सभा अधिकारी गण। सभा की ओर से स्मृति चिह्न भेंट करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी। इस अवसर सबसे बड़े आकार का सत्यार्थ प्रकाश भी भेंट किया गया।

98वें जन्मोत्सव समारोह के अवसर पर भजन प्रस्तुत करते आचार्य अंकित उपाध्याय एवं साथी एवं इस अवसर पर बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुति

चड्ढा जी (94 वर्ष) आप आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के महामंत्री श्री सतीश चड्ढा जी के पूज्य पिताजी हैं, इस क्रम में चौधरी सौदान सिंह आर्य जी (99 वर्ष, 7 महीने) आर्य समाज विकास नगर से जुड़े हुए हैं और आप सभा के मंत्री श्री सुखबीर सिंह आर्य जी के पूज्य पिताजी हैं। आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर जी (97 वर्ष) एवं श्रीमती सरला अनेजा जी (95) का भी इस अवसर पर सम्मान किया जाना था, किन्तु वे किन्हीं कारणों से कार्यक्रम में नहीं पहुंच सके थे। इस अवसर पर सभी सम्मानित वृद्धजनों के पूरे परिवार भी उपस्थित थे, सभी को सम्मान देकर दीर्घायु का आशीर्वाद प्राप्त करने वाले उपस्थित आर्य जनों ने तालियां बजाकर सबका स्वागत और अभिनंदन किया। यह अभिनंदन अपने आप में अत्यंत प्रेरणाप्रद सिद्ध हुआ।

कार्यक्रम के अगले चरण में ज्योति गुलाटी विशिष्ट प्रतिभा स्कॉलरशिप योजना के अंतर्गत दो ऐसी प्रतिभाओं ने महाशय जी के प्रति अपने उद्गार प्रस्तुत किए जो शारीरिक अक्षमता के बावजूद मनोबल और आत्म बल से बहुत मजबूत है। विद्यार्थी शुभम ने महशय जी को याद करते हुए बताया कि जब मैं पहली बार उनसे मिला तो उन्होंने अपनी बात कहने के लिए लिख लिख कर मुझे प्रेरणा प्रदान की, मैं उनको जीवन भर नहीं भूल पाऊंगा, महाशय जी मेरे मार्गदर्शक,पथ दर्शक के रूप में सदैव मेरे दिल में रहेंगे। कुमारी निष्ठा जैन ने महशय जी के आशीर्वाद और आत्मीयता को अपनी धरोहर के रूप में संजोकर रखने की बात कही, उन्होंने कहा की महशय जी की प्रेरणा मेरे लिए सफलता की सीढ़ियां है, उनका आशीर्वाद मेरा संबल है, मैं हमेशा उनके आशीर्वाद को महसूस करते हुए आगे बढ़ती रहूंगी। इन दोनों बच्चों को श्री राजीव गुलाटी जी और श्रीमती ज्योति गुलाटी जी ने आशीर्वाद दिया, आज महशय जी को याद करने के लिए और उनके प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करने वाले आर्य केंद्रीय सभा के अधिकारीगण, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के अधिकारीगण और दिल्ली सभा के अधिकारी गण सभी उपस्थित थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने महाशय जी को स्मरण करते हुए अपने वीडियो संदेश में कहा की महाशय जी द्वारा किए गए परोपकार के कार्य हम सबके लिए प्रेरणा प्रदान करते हैं, महाशय जी ने आर्य समाज के भामाशाह के रूप में अनेक संस्थाओं को सहयोग दिया और कई नई संस्थाओं का भी निर्माण किया, इस अवसर पर मैं उस महान विभूति को शत शत नमन करता हूं। सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य जी महाशय जी के प्रति अपने भावपूर्ण संदेश में कहा की महाशय जी एक महान परोपकारी व्यक्तित्व के साथ स्वामी थे, उनकी दान शीलता और प्रेरक स्वरूप हम सबके लिए अत्यंत मार्गदर्शन प्रदान करता है, हमें उनसे प्रेरणा लेकर उनके बताए रास्ते पर आगे बढ़ना चाहिए, मैं उन्हें शत-शत नमन करता हूं ।

दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने सभी आगंतुकों का धन्यवाद किया और महाशय जी 98 वे जन्मदिन के इस भाव पूर्ण दृश्य की प्रशंसा की, उन्होंने महाशय के जीवन पर आधारित गुरुकुलों के बच्चों की भी भूरि भूरि प्रशंसा की, उन्होंने कहा कि महाशय जी की प्रेरणा और आशीर्वाद की झलक उपस्थित बच्चों के कार्यक्रमों में दिखाई दे रही है, इस तरह से सब उन्हें याद करके मानव सेवा के पथ पर आगे बढ़े, यही महाशय जी की प्रेरणा का संदेश है, मैं महशय जी को शत शत नमन करता हूं, इसके उपरांत आर्य गुरुकुल रानी बाग के छात्रों ने महाशय जी के जीवन पर आधारित एक सांस्कृतिक प्रेरक नृत्य प्रस्तुत किया, सभी बच्चों ने महाशय जी के मुकुट को अपने चेहरे पर लगाया हुआ था और महशय जी की तरह ही जीवन में आगे बढ़ने के गीत पर एक्टिंग कर रहे थे, एक बच्चा महाशय बनकर छड़ी हाथ मे लेकर सब बच्चों को शिक्षा दे रहा था, उपस्थित जनसमुदाय बहुत ही मंत्र मुक्त हो गया इस क्रम में आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार की छात्राओं ने भी अत्यंत सारगर्भित प्रस्तुति प्रदान की सभी अपने हाथों में ओम ध्वज लेकर स्तूप बनाकर और नृत्य कर महाशय जी के संदेश को प्रदर्शित किया। गुरु विरजानंद संस्कृतकुलम के विद्यार्थियों की उपस्थिति अत्यंत प्रेरक थी। महाशय जीके जीवन पर आधारित महाशय चालीसा एक डॉक्यूमेंट्री के रूप में प्रस्तुत किया गया और अंत में एक कविता भी प्रस्तुत की गई सारा वातावरण भाव विभोर था प्रेम सौहार्द के वातावरण में शांति पाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

श्रीमती ज्योति गुलाटी विशिष्ट प्रतिभा स्कॉलरशिप योजना के लाभार्थी बच्चों का किया स्वागत एवं दिया आशीर्वाद

महाशय धर्मपाल जी ने दो दिव्यांग बालकों कु. शुभम एवं कु. निष्ठा जैन की प्रतिभा को देखते हुए अपना आशीर्वाद प्रदान किया था और ऐसे ही विशिष्ट प्रतिभा के धनी दिव्यांग बच्चों की शिक्षा के लिए आशीर्वाद स्वरूप श्रीमती ज्योति गुलाटी विशिष्ट प्रतिभा स्कॉलरशिप का शुभारम्भ किया था। महाशय धर्मपाल जी के 98वें जन्मदिवस के अवसर पर श्री राजीव गुलाटी जी एवं श्रीमती ज्योति गुलाटी जी ने इन दोनों बच्चों भेंट करके उनका स्वागत किया तथा आशीर्वाद प्रदान किया।।

महाशय धर्मपाल जी के 98वें जयन्ती समारोह के अवसर पर वीडियो सन्देश के माध्यम से शुभकामनाएं देते सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी एवं मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी

सेवा संकल्प दिवस - महाशय धर्मपाल जी के 98वें जन्मदिवस समारोह में उपस्थित आर्यजन

प्रथम पृष्ठ का शेष

संगठन की मजबूती एवं सहयोग के लिए 1 मई से होंगे ईकाई स्तर पर गोष्ठियां एव चिन्तन शिविर

अन्तरंग सभा बैठक की अध्यक्षता करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, संचालनन करते महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं महाशय धर्मपाल जी एवं अन्य दिवंगत महानुभावों का मौन श्रद्धांजलि अर्पित करते अन्तरंग एवं विशेष आमन्त्रित सदस्यगण।

21 मार्च, 2021 नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक दिनांक 21 मार्च, 2021 (रविवार) दोपहर 2:30 बजे आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली के सभागार में सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी की अध्यक्षता में गायत्री मंत्र एवं ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मन्त्रोच्चार के साथ के आरम्भ हुई। इस अवसर पर महामन्त्री श्री विनय आर्य, कोषाध्यक्ष श्री विद्या मित्र ठुकराल, उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य, श्री शिव कुमार मदान, श्री अरुण प्रकाश, मन्त्री श्री सुरेश चंद्र गुप्ता, श्री सुखवीर सिंह श्री वीरेंद्र सरदाना, श्री कृपाल सिंह, श्री सुरेन्द्र आर्य इत्यादि महानुभावों के साथ-साथ समस्त अन्तरंग सदस्यों, विशेष आमन्त्रित सहित सहित लगभग 110 आर्य महानुभावों ने उपस्थित होकर सभा संचालन में अपना सहयोग एवं निर्णयों में सहभागिता दी।

सर्वप्रथम महाशय धर्मपाल जी का स्मरण करते हुए दिवंगत महानुभावों को मौन श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर आर्य समाज के उत्थान और विस्तार हेतु कई महत्वपूर्ण तथ्यों पर विचार विमर्श किया गया और प्रस्ताव भी पारित किए गए।

अन्तरंग सभा बैठक में पारित प्रस्ताव एवं लिए गए निर्णय

1. वर्ष 2020-21 को किया गया जीरो (0) वर्ष घोषित। आर्यसमाजें अपने वार्षिक चुनाव 31 अगस्त, 2021 से पूर्व अवश्य करा लेवें।
2. 1 अप्रैल, 2021 से सरकार द्वारा जारी कोरोना नियमों के अनुसार पूर्ण रूप से संचालित करें आर्यसमाज की गतिविधियां।
3. आर्यसमाज सेवा कोष बनाने का निर्णय।
4. आयोजित होगी दिल्ली सभा, आर्य केंद्रीय सभा, एवं वेद प्रचार मंडल के अधिकारियों की दो दिवसीय विशेष गोष्ठी।
5. 90 वर्ष से अधिक आयु के आर्य वयोवृद्ध कार्यकर्ताओं का प्रतिवर्ष किया जाएगा सम्मान समारोह। 85 वर्ष से ऊपर के आर्य सदस्यों को आर्यसमाजें करेंगी सम्मानित।
6. गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी होगा ग्रीष्मकालीन स्वाध्याय शिविर का आयोजन।
7. आर्य समाजों की विभिन्न व्यवस्थाओं - आवास, धर्मशाला, नियुक्ति, रिकार्ड, एवं वित्त सम्बन्धी नियमावली बनाने का निर्णय
8. आर्यसमाजों के कानूनी एवं वित्त सम्बन्धी सहयोग के लिए बनेगा 11 सदस्यीय अधिवक्ता पैनल एवं चार्टेड एकाउंटेंट पैनल।
9. साप्ताहिक सत्संगों को सक्रिय करने के लिए विशेष कार्य समिति का गठन।
10. अन्य अनेक कार्यों के लिए उपसमितियों का गठन।

MDH
हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
10 एवं 20 किलो
की पैकिंग में उपलब्ध
प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

स्वास्थ्य रक्षा

बढ़ते मोटापे के कारण और निवारण

....आजकल मोटापे को कम करने के लिए तरह-तरह के चूर्ण, औषधियाँ, कैप्सूल पैकेज प्रोग्राम के तहत देकर बाजियां लगाई जा रहीं है। जबकि इन रसायनों से हृदय, गुर्दे फेफडे, आंतें एवम् यकृत क्षतिग्रस्त होते हैं। मोटापे को कम करने के लिए शल्य-क्रिया की सलाह दी जाती है, जिसमें आंतों को काटकर लम्बाई कम कर दी जाती है ताकि पाचित आहार का अवचूषण कम हो। लेकिन इससे भी खतरा बना रहता है। इससे आंतों में पैथोजेविक कीटाणुओं की ओवरग्रोथ द्वारा अरबों की संख्या में सम्बर्द्धन होता है। ये किटाणु रक्तसंचार द्वारा यकृत, स्नायुबन्ध संधियों की मांसपेशियों एवम् मस्तिष्कीय कोशों को क्षतिग्रस्त करते हैं। इसके परिणाम पॉली आर्थराइटिस, मानसिक विभ्रम, गंभीर कब्ज एवं अन्य शारीरिक व्याधियां उत्पन्न हो जाती है।......

गतांक से आगे -

इस युग में रोजाना समाचार पत्रों में बड़े-बड़े अक्षरों में मोटापा घटाने का दावा करने वाले विज्ञापनों की होड़ सी लगी हुई है। तरह-तरह की डाइटिंग थैरेपी से लेकर बेशुमार दवाईयों के सेवन का लुभावने भ्रामक प्रचार मीडिया द्वारा किए जाते हैं जिसके फायदे कम निराशा ज्यादा ही मिलती है। मोटापा घटाने का दावा करने वाले हैल्थ क्लब कुकुरमुत्ते की तरह फैल रहे हैं जो फायदा कम बाद में नुकसान अधिक पहुंचाते हैं।

स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य एक दूसरे के पूरक हैं। मोटापे से पीड़ित रोगियों में किसी न किसी रोग की शिकायत रहती है। मोटे व्यक्ति का चेहरा, नाक, आंख, गला, ठोडी इत्यादि पर अधिक चर्बी जमा होने पर, पेट तोंद की तरह बाहर निकलने से ढुलमुल शरीर होने से समाज विभिन्न अलंकारों से जैसे मोटूलाला, मोटल्ला, मोटूराम, गोलमटोल, ढोलूराम इत्यादि से फबतियां कसने लगते हैं।

आजकल मोटापे को कम करने के लिए तरह-तरह के चूर्ण, औषधियाँ, कैप्सूल पैकेज प्रोग्राम के तहत देकर बाजियां लगाई जा रहीं है। जबकि इन रसायनों से हृदय, गुर्दे फेफडे, आंतें एवम् यकृत क्षतिग्रस्त होते हैं। मोटापे को कम करने के लिए शल्य-क्रिया की सलाह दी जाती है, जिसमें आंतों को काटकर लम्बाई कम कर दी जाती है ताकि पाचित आहार का अवचूषण कम हो। लेकिन इससे भी खतरा बना रहता है। इससे आंतों में पैथोजेविक कीटाणुओं की ओवरग्रोथ द्वारा अरबों की संख्या में सम्बर्द्धन होता है। ये कीटाणु रक्तसंचार द्वारा यकृत, स्नायुबन्ध संधियों की मांसपेशियों एवम् मस्तिष्कीय कोशों को क्षतिग्रस्त करते हैं। इसके परिणाम पॉली आर्थराइटिस, मानसिक विभ्रम, गंभीर कब्ज एवं अन्य शारीरिक व्याधियां उत्पन्न हो जाती है।

मोटापे का योग्य उपचार - योग

गहरे श्वास-प्रश्वास लेते हुए पूरे शरीर को हिलाते हुए भ्रमण एवं जैविक आहार, संयम नियमित जीवन शैली को अपनाते हुए इस स्थूलकाय शरीर के बोझ से छुटकारा पाया जा सकता है। शरीर में चर्बी त्वचा के भीतरी हिस्सों में एवम् खोखले हिस्सों में जल्दी इकट्ठी होती है। उचित चर्बी शरीर में सुडौलता एवं सुन्दरता बनाए रखती है। चर्बी से शरीर को शक्ति एवं ऊष्णता मिलती है। यही चर्बी अगर शरीर में अधिक एकत्रित हो जाती है तो घातक सिद्ध होती है।

निर्धारित वजन से 10 से प्रतिशत वजन अगर ज्यादा बढ़ जाता है तो वह मोटापे का सूचक है।

आयु के अनुसार बच्चों का वजन

आयु (वर्ष)	लड़का (कि.ग्रा.)	लड़की (कि.ग्रा.)
5	19.5	18.5
10	32.5	29.5
15	52.5	48.8
16	55.5	49.8

लम्बाई के अनुसार पुरुषों एवं स्त्रियों का औसत वजन

लम्बाई		वजन (कि.ग्रा.)	
(फुट)	(से.मी.)	पुरुष	स्त्री
4-8	147	55.0	48.0
5-0	152	56.5	50.5
5-2	157	58.5	53.0
5-4	162	61.0	56.5
5-6	167	62.5	59.0
5-8	172	65.5	62.5
5-10	177	68.5	65.5
6-0	182	73.0	68.5

ऊपर दर्शाई गई वजन तालिका में उम्र के बढ़ने के साथ या विवाह उपरान्त या शरीर के विभिन्न आकारों पर या पारिवारिक परिस्थितियों में वजन 5-6 किलों तक ज्यादा रह सकता है।

- शेष अगले अंक में

Continue From Last issue

Makers of the Arya Samaj : Pt. Lekh Ram Ji

After some time he reached Mirzapur. There he came across a member of the Arya Samaj who belonged to a low caste. He was surprised to find that the man had no sacred thread. He asked him why this was. The man replied, "How can I, a low caste Hindu, be invested with the sacred thread? It is only the privilege of high caste Hindus to wear sacred things." But Pandit ji said to him, "Do not worry. It is your right as much as the right of high caste Hindus, to be invested with the sacred thread. I will, therefore, perform the ceremony myself and invest you with the sacred thread." He kept his word. The ceremony was performed in a few days. All the local Arya Samajists took part in it.

Kashi, Dumroan, Danapur, Bankipur and Patna were the other places he visited. At Bankipur the Secretary of the Arya Samaj received a telegram from Pt. Lekh Ram's people inquiring if the Pandit was alive. A reply was at once sent saying that he was hale and hearty. This was not the first time thatill-founded rumours had been spread about.

At Bankipur he was advised by a friend not to criticize Islam so much. The friend added, "You might come to grief on account of this." But the Pandit replied, "I do not care for what happens to me. Death is inevitable, therefore I do not bother about it. Nothing will give me greater pleasure than to die for my faith. Ifthis ever happens, my faith will gain by it."

The same friend asked him why he did not translate the Satyarath Prakash into Persian. He said that he was already thinking of doing so. But he would take it up after he had written a life of Swami Dayanand. He further added that he wanted to go to Arabia, Persia, Egypt and Turkistan. "Why do you want to do so?" asked the friend. "I want to visit these countries to propagate my faith," said Pandit ji. "But what will you do," asked the friend, "if the Representative Assembly does not permit you to do so?" "I will go there on my own account," replied the Pandit. "I will be able to live there by practising medicine, of which I know something even now."

It was at this place that he paid a visit to

..... Pt. Lekh Ram was not quite welcome. As soon as he reached there the Arya Samajists appointed four persons to guard him against all kinds of harm. But the Pandit said, "All of you seem to be cowards. You appear to have no faith in yourselves. I do not want anybody to protect my life. Nothing can do me harm, for God protects us all. He was also warned against receiving any Mohammadan visitors. But he did not heed this warning. On the other hand, he delivered several lectures on Islam, which were not to the taste of the Mohamrnadans, Before he left, he asked the Arya Samajists to start a paper of their own. ....

Mr. Khuda Baksh's library. There he came across a rare edition of the Qoran. He spent several days in the library and took down notes from the books in it. He also paid a visit to a press there which was publishing a paper. In it he came across several reports of discussions which Swami Dayanand had held.

After visiting Calcutta he went to Hardwar. There the Kumbh fair was to be held. He did much to propagate his faith there. After wards he went to Lahore and published an account ofthe fair.

At Lahore he learnt that some Hindus in Hyderabad were going to be converted to Islam. This made him very ill at ease. He therefore left for Hyderabad without the least delay. There he met the persons in question and had several long talks with them. But they said, "We know nothing about these things. You would do better to have a talk with our Maulvis." He then had some discussion with the Maulvis. The result was that the Hindus did not change their faith.

He returned to the Punjab and travelled about from place to place. After a short time he received an invitation from Nahan. A Sanatanist pandit there was creating much trouble for the Arya Samaj ists. He went there and delivered forty lectures. After establishing an Arya Samaj he returned home.

After some time Pt. Lekh Ram went to Rajputana. Swami Dayanand had spent some part of his life there and he wanted to know about it. He visited Bundi, Ajmer, Jaipur and other places. At each of these places he delivered lectures. These sometimes brought trouble on his head, but he did not care.

At Ajmer he met Shri Har Bilas Sarda, who said of him, "Excepting Swami Dayanand, I have not come across any other Arya Samajist who is more truthful, more unselfish and more hardworking than Pt. Lekh Ram. His passions are under control, and he never wastes a single minute of his time. He expressed a sense of pain on seeing that some oftheArya Samajists did not act in accordance with their beliefs. He believed that India would never make any progress unless Indians came to have a firm faith in the Vedas. I had been thinking for some time of publishing an edition of the Manu Smriti which should be free from all defects. I talked this thing over with him. He said that he had with him twenty-six different editions of the Manu Srnriti. All these, he said, were rare and he had brought them from Kashmere. On being requested he even translated one chapter of the book into Hindi. He further said that after completing this book he would translate the Ramayana into Hindi. He expressed a desire that the Arya Samajists should bring out a monthly like the Nineteenth Century and After. He was very much interested in history and wanted to write a history of ancient India."

After visiting Rajputana he returned to the Punjab where he stayed for some time. But he again went back to Rajputana to seek out Swami Dayanand's place of birth. He somehow learnt that Swami Dayanand was born in a place in the State ofMorvi. He went there and after visiting many places found the exact place of Swamiji's birth.

But he was soon called back to the Punjab, because ofthe differences amongst the Arya Samaj ists. Being a man of restless energy he again visited several places in the Punjab, then he went home on leave. But he did not sit idle. He wrote many articles for the papers. From there he wrote in a letter to a friend, "It is a pity that the books of the Arya Samaj are not translated into many languages. It is also a pity thatArya preachers do not know many languages. I really feel sad to think that there are very few preachers of the Arya Samaj who would be ready to sacrifice themselves for their faith. Englishmen give up big posts and become preachers oftheir faith. But amongst us there are very few well-read and self-sacrificing preachers."

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

संस्कृत वाक्य प्रबोध — सभा प्रकरणम् एवं आर्य्यावर्त्तचक्रवर्त्तिराजप्रकरणम्

गतांक से आगे –

संस्कृत	हिन्दी
140. इदानीं सभायां काचिच्चर्च्चा विधेया	अब सभा में कुछ वार्तालाप करना चाहिये।
141. धर्म्मः किं लक्षणोऽस्तीति पृच्छामि?	मैं पूछता हूं कि धर्म्म का क्या लक्षण है?
142. वेदप्रतिपाद्यो न्याय्यः पक्षपातरहितो यश्च परोपकार सत्याऽऽचरणलक्षणः।	वेदोक्त न्यायानुकूल पक्षपातरहित और जो पराया उपकार तथा सत्याचरणयुत्त है उसी को धर्म जानना चाहिये।
143. ईश्वरः कोऽस्तीति ब्रूहि?	ईश्वर किसको कहते हैं, आप कहिये?
144. यः सच्चिदानन्दस्वरूपः सत्यगुणकर्मस्वभावः।	जो सच्चिदानन्दस्वरूप और जिसके गुण कर्म स्वभाव सत्य ही हैं वह ईश्वर है।
145. मनुष्यैः परस्परं कथं वर्त्तितव्यम्?	मनुष्यों को एक-दूसरे के साथ कैसे-कैसे वर्तना चाहिये?
146. धर्मसुशीलतापरोपकारैः सह यथायोग्यम्।	धर्म, श्रेष्ठ स्वभाव और परोपकार के साथ जिनसे जैसा व्यवहार करना योग्य हो वैसा ही उनसे वर्तना चाहिये।
147. अस्मिन्नार्यावर्त्ते पुरा के के चक्रवर्त्तिराजा अभूवन्?	इस आर्य्यावर्त्त देश में पहिले कौन-कौन चक्रवर्ती राजा हुए हैं?
148. स्वायम्भुवाद्या युधिष्ठिरपर्यन्ताः।	स्वायंभु से लेकर युधिष्ठिर पर्य्यन्त।
149. चक्रवर्त्तिशब्दस्य कः पदार्थः?	चक्रवर्ती पद का क्या अर्थ है?
150. य एकस्मिन् भूगोले स्वकीयामाज्ञां प्रवर्त्तयितुं समर्थाः।	जो एक भूगोल भर में अपनी राजनीति रूप आज्ञा को चलाने में समर्थ हों।
151. ते कीदृशीमाज्ञां प्राचीचरन्?	वे कैसी आज्ञा का प्रचार करते थे?
152. यया धर्मिकाणां पालनं दुष्टानां च ताडनं भवेत्।	जिससे धर्मियों का पालन और दुष्टों का ताड़न होवे।

क्रमशः - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

पृष्ठ 3 का शेष

योग का उद्देश्य......

महर्षि दयानन्द जी जहां मिथ्यावादियों के पाखण्ड का खण्डन करते हैं वहीं सत्य का अनुमोदन करते हुए उन्होंने अपने यजुर्वेदभाष्य, ऋग्वेदभाष्य में तथा अपने पत्रों में सत्य का दर्शन कराया है। जैसा- ''देखो पूर्वकाल में हमारे ऋषि-मुनियों को कैसी पदार्थविद्या आती थी कि जिससे आत्मा के बल से सबके अन्त:करण के भेद को शीघ्र ही जान लिया करते थे। जैसे बाहर के पदार्थविद्या से सिद्ध किये हुए रेल, तारादि विद्या को मूर्ख लोग जादू समझते हैं, वैसे ही भीतरी के पदार्थों के योग से अनेक कर्म कर सकते हैं। इनमें कोई आश्चर्य नहीं है, क्योंकि मनुष्य लोग जितनी विद्या बाहर के पदार्थों से सिद्ध करते हैं, उससे कई गुनी अधिक भीतर के पदार्थों से सिद्ध कर सकते हैं।'' *(ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन - सम्पादक-श्री भगवतदत्त रिचर्स स्कोलर)*

द्वितीय स्थान पर मुम्बई के प्रवचन में पुन: इसी विषय को दृढ़ता से कहते हैं - ''भीतर के पदार्थ बहुत महान् और गुप्त हैं, और उस स्थूल जगत में जो गुण और चमत्कार देखने में आते हैं, उससे करोड़ों गुने गुण और चमत्कार भीतर विद्यमान हैं। बाहर के चमत्कार इन्द्रियों से ग्रहण करे जा सकते हैं किन्तु मनुष्य स्थिर होकर शोध करे तो उससे बहुत अधिक चमत्कार भीतर के उसे देखने में आयेंगे।''

ऋषि दयानन्द ने बाह्य और स्थूल पदार्थों के गुणों के आविष्कार का जहाँ महत्त्व देखा और समझा, उसी प्रकार से आभ्यन्तर के अर्थात् शरीर के पदार्थों के महत्व को इनके परीक्षणकर्त्ता जिनको योगी कहते हैं उनके महत्त्व को दर्शाया।

अब जो लोग उतना श्रम नहीं कर सकते या शीघ्र जनसामान्य में अपने आप को योगी प्रख्यापित करने की भावना से ग्रस्त हैं। वे दोंनो ही सत्य से बहुत दूर हैं, उनके सम्बन्ध में तो यही कहा जा सकता है ''दह्यमाना: सुतीव्रेण नीचा: परयशोऽग्निना। अशक्तास्तत्पदं गन्तुं ततो निन्दां प्रकुर्वते'' (चा. नी. 13/10) या अंगूर ही खट्टे हैं, उस लोमड़ी की भाषा बोलते हैं। हमें योग के श्रेष्ठतम आचार्यों के निर्देशों का पालन करते हुए उत्तरोत्तर आगे बढ़ते हुए उनका निरीक्षण एवं परीक्षण करना चाहिए। ऋषियों को मिथ्याचारी, मिथ्यालापी अपनी दुर्बलता को छिपाने के लिए नहीं कहना चाहिए, क्योंकि भविष्य में कुछ अनुसंधानकर्त्ता व्यक्ति योग का अनुष्ठान करके उनका प्रत्यक्षीकरण करेंगे तो इन दोंनों प्रकार के योगियों मिथ्याविभूतिवादियों एवं विभूतियों को मिथ्या कहने वालों पर हसेंगे। जिस प्रकार भौतिकपदार्थों का परीक्षण-निरीक्षण एक विज्ञान है। उसी प्रकार आभ्यन्तरिक पदार्थों का निरीक्षण एवं परीक्षण उस विज्ञान से भी बड़ा विज्ञान है।

- कुलाधिपति,
गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी,
भोला-झाल, मेरठ (उ.प्र.)

आवश्यक सूचना
शास्त्रार्थों के रोचक संस्मरण पुस्तक के संदर्भ में निवेदन

समस्त आर्यसमाजों के मान्य अधिकारियों, सदस्यों, कार्यकर्ताओं और आर्यजनों से निवेदन है कि पूज्य स्वामी जगदीश्वरानंद जी द्वारा लिखित पुस्तक शास्त्रार्थो के रोचक संस्मरण की प्रति अगर किसी महानुभाव के पास हो, तो कृपया उसकी फोटो प्रति अथवा मूल प्रति दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को भिजवाने की कृपा करें। यह पुस्तक कहीं मिल नहीं रही है और सभा इसका पुन: पकाशन कराना चाहती है। पुस्तक की प्रति भिजवाने के लिए यदि कोई शुल्क देय हो तो कृपया सूचित करें, सभा की ओर से भुगतान कर दिया जाएगा। कृपया पुस्तक/ प्रति '**महामन्त्री**' के नाम निम्न पते पर भेजें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत
वैदिक उपदेशक एवं भजनोपदेशक परिचय पुस्तिका का प्रकाशन

आपको जानकर हर्ष होगा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने भारत के समस्त वैदिक उपदेशकों एवं भजनोपदेशकों की परिचय पुस्तिका प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। इस पुस्तक में आर्यजगत के समस्त उपदेशक एवं भजनोपदेशक महानुभावों के नाम, पते, सम्पर्क सूत्र, संक्षिप्त जीवन परिचय फोटो के साथ प्रकाशित किया जाना सुनिश्चित किया है।

अत: समस्त उपदेशक/भजनोपदेशक महानुभावों से निवेदन है कि अपना संक्षिप्त जीवन परिचय - अपने जीवन, उपयोगी कार्य, परिवार, शैक्षिक योग्यता/प्रचार क्षेत्र व प्रमुख उपलब्धियों के विवरण के साथ भेजें, जिससे उन्हें पुस्तक में उचित स्थान दिया जा सके। कृपया अपना विवरण '**सम्पादक, वैदिक उपदेशक/भजनोपदेशक विरणिका**' के नाम **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001**' के पते पर प्रेषित करें। - *महामन्त्री*

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र
सत्य की राह Vedic Path to Absolute Truth
मात्र 30/- रु. हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध
प्राप्ति स्थान : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. नं. 9540040339

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां! तो

जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उनकी ईमेल आई.डी. लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट/टेलिग्राम द्वारा भेजा जाता रहेगा। - सम्पादक

आर्यसमाज की ऐतिहासिक घटनाएं

आर्यसमाज का इतिहास घटनाओं का इतिहास है। आर्यसमाज के इतिहास को बनाने में आर्यसमाजी बने व्यक्ति के साथ घटित घटनाओं का विशेष योगदान रहा है। आपके आर्य परिवार में भी किसी ऐतिहासिक घटना का होना सम्भव है।

अत: आप सभी पाठक महानुभावों से निवेदन है कि यदि आपके परिवार सदस्य के आर्य बनने अथवा किसी आर्य समाज मंदिर की स्थापना से सम्बन्धित के साथ ऐतिहासिक घटना घटित हुई हो या कोई ऐसी घटना जिसे आप आर्यसमाज के इतिहास के सम्बन्ध में ऐतिहासिक समझते हों और आपकी जानकारी में हों, हमें भेजने की कृपा करें। आपकी ऐतिहासिक घटना को आर्यसन्देश साप्ताहिक में जनसाधारण की जानकारी हेतु प्रकाशित किया जाएगा। - ***सम्पादक***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा/आर्यसमाज दिल्ली से सम्बन्धित नवीनतम सूचनाओं व जानकारियों हेतु जुड़ें व्हाट्सएप्प पर और साझा करें विचार

पुरोहित चाहिए

आर्य समाज पश्चिम पुरी, नई दिल्ली को एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है, जो समस्त वैदिक संस्कार पूर्ण निपुणता के साथ सम्पन्न करा सकें। आर्यसमाज की ओर से आवास एवं बिजली-पानी की व्यवस्थाएं नि:शुल्क प्रदान की जाएंगी। ऐसे महानुभावों को प्राथमिकता दी जाएगी जो परिवारों एवं क्षेत्र में अपने सामर्थ्य से संस्कार करा सकें। सम्पर्क करें - *9818087360*

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 29 मार्च, 2021 से रविवार 4 अप्रैल, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 01-02/04/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 31 मार्च, 2021

प्रतिष्ठा में,

विश्व का पहला वेद आधारित लाइव टीवी चैनल

ARYA SANDESH TV एप को डाउनलोड करें।

एप्प डाउनलोड करने के लिए लिंक पर जाएं - https://bit.ly/2OWyt2x

वैदिक धर्म के सन्देश को विश्व में प्रसारित करने के लिए यह सन्देश अधिक से अधिक लोगों को फॉरवर्ड करें एवं एप्प डाउनलोड कराएं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
https://amzn.to/3i3rKl7

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

यज्ञ कुण्ड सैट प्राप्त करें

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली 2018 में 10,000 याज्ञिकों द्वारा एकरूप यज्ञ के विहंगम दृश्य आपने अवश्य देखा होगा। महासम्मेलन में प्रयुक्त किए गए यज्ञ कुण्ड सैट आपके परिवार, संस्था, समाज में प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा दैनिक यज्ञ प्रेमियों के लिए उपलब्ध।

मूल्य
मात्र 900/- रुपये

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें -
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह